डॉ. बिभा कुमारी

हिंदी विभाग

विश्वेश्वर सिंह जनता महाविद्यालय राजनगर

हिंदी प्रतिष्ठा,तृतीय वर्ष, पत्र - अष्टम

भारतीय काव्यशास्त्र की परंपरा और विभिन्न सम्प्रदाय

भारतीय काव्यशास्त्र की एक समृद्ध प्राचीन परंपरा रही है। संस्कृत भाषा को भारतीय भाषाओं का आदिस्रोत माना जाता है। संस्कृत में काव्य – तत्वों का व्यापक विवेचन हुआ है। भारतीय काव्यशास्त्र की सुदीर्घ परंपरा रही है जिसमें अनेक आचार्यों ने काव्यशास्त्रीय तत्व निरूपण करते हुए विभिन्न संप्रदायों में विशद काव्यशास्त्रीय विवेचन किया है। काव्यशास्त्रीय विवेचना और काव्यतत्वों का निरूपण जिन प्रमुख आचार्यों ने किया है उसमें पहला नाम आचार्य भरत का आता है। आचार्य भरत का काल ईसापूर्व तीसरी शताब्दी से ईसा की दूसरी शताब्दी के मध्य माना गया है। आचार्य भरत से लेकर अठारहवीं शताब्दी के पंडितराज जगन्नाथ तक संस्कृत काव्यशास्त्र में साहित्य चिंतन के विविध आयाम उद्घाटित हुए। साहित्यशास्त्र संबंधी विविध बिंदुओं पर गंभीर विचार – विमर्श, तर्क – वितर्क, स्थापनाएँ, खंडन – मंडन की प्रक्रिया चलती रही हैं और काव्यसम्बन्धी विभिन्न तत्वों, उनके वैशिष्ट्य और महत्व पर भी निरंतर चिंतन – मनन होता रहा है। साहित्यशास्त्र का इतिहास लगभग दो हजार वर्ष पुराना रहा है। विद्वानों ने इस लंबी परंपरा को चार भागों में विभक्त किया है –

1. प्रारंभिक काल –
   ईसवी पूर्व तृतीय शताब्दी से लेकर सप्तम शताब्दी से पूर्व तक के काल को काव्यशास्त्रीय परंपरा का प्रारंभिक काल माना जाता है। इस काल में भरत ने अपनी स्थापनाओं द्वारा साहित्य – चिंतन की परंपरा का सूत्रपात किया। इस काल का प्रमुख ग्रंथ नाट्यशास्त्र है जिसमें नाट्य और रस का अत्यंत सूक्ष्म और विस्तृत विवेचन हुआ है।
2. रचनात्मक काल – यह काल सातवीं शताब्दी से कुछ पहले से लेकर लगभग आठवीं शताब्दी तक है। इस युग को रचनात्मक काल कहा जाता है, इसका कारण यह है कि इस काल में काव्यशास्त्रीय विभिन्न संप्रदायों के मौलिक ग्रंथों की रचना हुई। इस काल के प्रमुख सम्प्रदाय और संबंधित आचार्य इस प्रकार हैं –
   अलंकार सम्प्रदाय – भामह, दण्डी, उद्भट, रुद्रट
   रीति सम्प्रदाय – वामन
   रस सम्प्रदाय – लोल्लट, शंकुक, भट्टनायक
   ध्वनि सम्प्रदाय – आनंदवर्धन
3. निर्णयात्मक काल – आठवीं शताब्दी से लेकर दसवीं शताब्दी तक के समय को निर्णयात्मक काल कहा जाता है। इस काल में आनंदवर्धन से लेकर मम्मट तक का काल समाविष्ट है। आचार्य अभिनवगुप्त, कुंतक और महिमभट्ट इस काल के प्रमुख आचार्य हैं। इस काल में पूर्व में बने सिद्धांतों की स्थापना प्रमुखता से हुई। आचार्य कुंतक ने 'वक्रोक्ति जीवित' ग्रंथ द्वारा वक्रोक्ति सिद्धांत का प्रतिपादन किया।

4. व्याख्या काल – ग्यारहवीं शताब्दी से लेकर अठारहवीं शताब्दी तक की अवधि को व्याख्या काल कहते हैं। इस कालखंड में मम्मट, विश्वनाथ, जयदेव, जगन्नाथ आदि ने काव्य की सर्वांगपूर्ण विवेचना की। इसी कालखंड में रुय्यक और अप्पय दीक्षित ने अलंकारों का विवेचन किया।

कुछ विद्वानों ने काव्यशास्त्रीय परंपरा का आधार ध्वनि – सिद्धांत को माना है। विद्वानों ने साहित्यशास्त्र में ध्वनि सिद्धांत को प्रमुख रूप से युगप्रवर्तक सिद्धांत माना है। ध्वनि सिद्धांत के आधार पर काव्य शास्त्रीय परंपरा को तीन कालों में विभाजित किया गया है –

1.पूर्व ध्वनिकाल – भरत से लेकर आनंदवर्धन तक

2. ध्वनिकाल – आनंदवर्धन से मम्मट तक

3. ध्वनिपरवर्ती काल – मम्मट से जगन्नाथ तक

भारतीय काव्यशास्त्र के विभिन्न सम्प्रदाय –

भारतीय काव्य – चिंतन के मूल तत्व को लेकर विद्वानों में मतैक्य नहीं है। अलग – अलग विद्वानों ने काव्य – चिंतन के अलग – अलग तत्व बताए हैं –

आचार्यों ने अपने सिद्धांतों द्वारा काव्य के वैशिष्ट्य को अलग – अलग रूप में परिभाषित किया है और इस प्रकार भारतीय काव्यशास्त्र में विभिन्न सम्प्रदायों की स्थापना हुई है। कुछ आचार्यों ने रस को काव्य की आत्मा माना, कुछ ने ध्वनि को और कुछ ने रीति को। कुछ विद्वानों ने अलंकार को काव्य का सर्वस्व माना है तो कुछ वक्रोक्ति को। विचारों की विविधता के आधार पर भारतीय काव्यशास्त्र के छह सम्प्रदाय प्रतिष्ठित हुए हैं –

1. रस सम्प्रदाय
2. अलंकार सम्प्रदाय
3. रीति सम्प्रदाय
4. ध्वनि सम्प्रदाय
5. वक्रोक्ति सम्प्रदाय
6. औचित्य सम्प्रदाय